'उमड़ते सौ करोड़' अभियान

हर तीन औरतों में एक से ज़्यादा अपने जीवन में किसी न किसी प्रकार की हिंसा का सामना करती है। इसका मतलब है कि करीब सात सौ करोड़ औरतें हिंसा का शिकार हैं। औरतों के साथ होने वाली इस हिंसा को हमेशा के लिए जड़ से मिटाने के विश्व-व्यापी संघर्ष का नाम है ***उमड़ते सौ करोड़***।

14 फरवरी 2012 को वी-डे तथा इसकी संस्थापक, ईव एन्सलर ने इस एक वर्षीय अभियान का आगाज़ किया और समस्त विश्व को इस महत्वपूर्ण पहल के साथ जुड़ने की दावत दी। 14 फ़रवरी 2013 को यह अभियान दुनिया को झकझोरने का इरादा रखता है। उस दिन पूरे विश्व के अलग-अलग शहरों, राज्यों, देशों के सौ करोड़ लोग, अपना सब काम छोड़कर घरों, स्कूलों, दफ़्तरों, कालेजों से बाहर सड़कों पर निकलेंगे। वे एक साथ मिलकर नाचेंगे, गायेंगे और जश्न मनाएंगे। इसके साथ-साथ वे अपनी इस एकजुटता के साथ हिंसा को जड़ से मिटाने की मांग का आह्वान करेंगे। सभी के विरोध-प्रदर्शन का एक ही नारा होगा— बस, अब और नहीं! कत्तई नहीं!!!

हमारा विश्वास है कि ये अभियान एक बहुत सशक्त भूमंडलीय पहल है। हममें से हरेक नागरिक को जो समाज में व्याप्त हिंसा को जड़ से मिटाने के प्रति वचनबद्ध है, इसका हिस्सा बनना चाहिए, इसमें शिरकत करनी चाहिए।

इस अभियान से जुड़े सभी पक्षों व सहयोगियों से चर्चा के बाद दक्षिण एशिया में इस अभियान के संचालन की ज़िम्मेदारी 'संगत' ने उठाने का निश्चय किया है। दक्षिण एशिया व आस-पड़ोस के क्षेत्रों के विभिन्न देशों के सक्रिय संगठनों और कार्यकर्ताओं ने इस अगुवाई को एक सकारात्मक पहल माना है और हमारे साथ जुड़ने का इरादा किया है।

हालांकि इस अभियान की शुरूआत वी-डे द्वारा की गई है लेकिन पूरी दुनिया के लोग अपने देश, प्रदेश, शहर और इलाके में इसे अपने ढंग से चलाएंगे। इसका स्वरूप, गतिविधियां और मुद्दे स्थानीय तौर पर तय किए जाएंगे। इस लिहाज़ से 'उमड़ते सौ करोड़' अभियान लोगों का अपना आंदोलन है।

ईव एन्सलर, दक्षिण एशिया के संगठनों व कार्यकर्ताओं के साथ विचार-विमर्श के बाद निम्न बातें पुख़्ता होकर सामने आई हैं। कुछ बातों का ताल्लुक हमारे वैचारिक मूल्यों से है तो कुछ अभियान के संचालन पक्ष से जुड़ी हैं।

- इस अभियान की योजना और स्वरूप स्थानीय स्तर पर तय किया जाएगा यानी सत्ता का विकेंद्रीकरण होगा। इसमें काम करने व फ़ैसले लेने की प्रक्रिया लोकतांत्रिक रहेगी।
- काम-काज से लेकर पूंजी इकट्ठी करने व इस्तेमाल की प्रक्रिया में पारदर्शिता व जबावदेही होगी।
- 'संगत' दक्षिण एशिया के देशों में अपने प्रतिनिधि सदस्य नियुक्त करेगी जो अपनी देशीय संस्थाओं और भागीदारों के बीच तालमेल और समन्वय रखेंगे।
- भारत में एक राष्ट्रीय समूह, क्षेत्रीय व स्थानीय समितियां होंगी जो आपसी सहयोग से काम करेंगी।
- इस अभियान को चलाने के लिए ज़रूरी संसाधन हमें खुद अपने स्थानीय स्तर पर जुटाने होंगे।
- अभियान से जुड़े नारे, गीत, पोस्टर, बैनर व अन्य सामग्री आपस में एक दूसरे के साथ बांटी जाएंगी।
- अपने देश के जागरूक व प्रतिबद्ध कलाकारों, गायकों, अभिनेताओं, चित्रकारों से सम्पर्क करके उन्हें इस अभियान से जोड़ना होगा। परन्तु यह स्पष्ट रहना चाहिए कि इस अभियान में उनकी कोई केन्द्रीय भूमिका नहीं होगी। कलाकारों से आग्रह होगा कि वे अपनी कला के ज़रिए औरतों पर होने वाली हिंसा का मुद्दा उठाएं व कुछ नया रचें। ये कृतियां गीत, नाटक, लघु फ़िल्म, चित्र, पोस्टर, क्लिप आदि किसी भी रूप में हो सकती हैं।
- एक विशेष बात यह है कि सौ करोड़ लोगों को एकजुट करने के लिए हमें बहुत से ऐसे लोगों का सहयोग भी लेना पड़ेगा जो जेंडर संबंधी मुद्दों पर काम न करते हों या वैचारिक फ़र्क़ों के कारण अन्य हालातों मे शायद हम उनके साथ काम न करें। परन्तु इस अभियान को हमें एक इंद्रधनुषी गठजोड़ की तरह देखना चाहिए जिसमें अधिक से अधिक लोगों की शिरकत महत्वपूर्ण है।
- बड़े समूहों जैसे युवा वर्ग, विद्यार्थियों के मंच, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा अन्य के साथ भी गठजोड़ का भी प्रयास किया जाना चाहिए।
- राजनैतिक पार्टियों और राजनेताओं की सहभागिता के बारे में हमें सोच-समझकर फ़ैसला लेना होगा।
- इस अभियान में मीडिया का सहयोग एक अहम पहलू है इसलिए हर देश में एक मीडिया समूह गठित किया जायेगा। मीडिया में सक्रिय नारीवादी विचारधारा वाले पत्रकारों से सम्पर्क करके उनसे इस पहल में जुड़ने का अनुरोध करना चाहिए।
- अखबारों, टीवी चैनलों और पत्र-पत्रिकाओं को अपने साथ जोड़ना चाहिए ताकि पूरे वर्ष यह मुद्दा सुर्खियों में रहे तथा हमारी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां व अन्य गतिविधियां लोगों तक पहुंचती रहें।
- ***उमड़ते सौ करोड़*** एक आम अभियान या आंदोलन नहीं है। यह हम सबके लिए आखिरी पड़ाव है। अब कुछ ऐसा होना ही चाहिए कि हिंसा और बलात्कार की संस्कृति जड़ से ख़त्म हो जाए और समाज, देश और दुनिया में बदलाव की लहर आए।

इस अभियान के ज़रिए हमारा मक़सद है लोगों, समाज, देशों और दुनिया की सोच बदलना। हम वादा करते हैं कि इस अगुवाई के चलते हम 14 फरवरी 2013 को अपने पैरों का थाप व बुलंद आवाज़ से धरती व आसमान को गुंजा देंगे। हमारे इस जश्न में हर देश, नस्ल, रंग, वर्ग, यौनिक पहचान वाले तमाम लोग शामिल होंगे जो हिंसा का नामो-निशान मिटाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। तो आइए, हमारे साथ इस अभियान, इस क्रांति, इस सशक्त इंकार में शिरकत कीजिए और दोहराइए:

हिंसा का दर्द पीना हमें मंजूर नहीं, डर के सायों में जीना हमें मंजूर नहीं
कौन कहता है कि यह एक मजबूरी है, बस! अब ये सूरते-हाल हमें मंजूर नहीं!